ग़ैबत

कुर्आन, हदीस और साइंस की रौशनी में

मुफ़क्किरे इस्लाम डा0 मौलाना सै0 कल्बे सादिक़ साहिब क़िब्ला

माद्दी दुनिया की निगाहों से छुपी हुई बेशुमार चीज़ों पर यक़ीन रखने के बावजूद मज़हबी दुनिया में ग़ैबत से इन्कार इन्सान की आदत है यही आदत कभी उस से अन्देखे ख़ालिक़ का इन्कार कराती है, कभी आख़िरत और उससे जुड़ी हुई तमाम चीज़ों से और कभी ख़ुद अपनी रूह के वजूद से। इसी आदत का एक रुख़ यह है कि अक्सर ख़ुदा के मानने वाले भी ग़ायब ख़ुदा के सामने उस वक़्त तक सजदा करने के लिए तैयार नहीं होते जब तक उस ग़ायब ख़ुदा का कोई माद्दी पैकर या मज़हर तराश न लिया जाए।

आज का इन्सान दुनिया के एक–एक ज़र्रे के आइन–ए–ज़ाते किरदगार होने के बावजूद ख़ालिक़ के वजूद का सिर्फ़ इसलिए इन्कार कर देता है कि वह ख़ुद मुजस्सम शक्ल में उनके सामने क्यों नहीं आ जाता। मगर ''जुर्म ग़ैबत'' पर ख़ालिक़ के वजूद से इन्कार कर देने वाला इन्सान भी मख़लूक़ की ग़ैबत पर ईमान रखने पर मजबूर है। ख़ालिक़ को न मानने वाला इन्सान तस्लीम करता है कि काएनात एटमी ज़र्रों से बनी है और यह कि फ़ितरत के कुछ क़ानून हैं जो इन ज़र्रों को अलग–अलग शक्लें देते हैं और इन्हें मुख़तलिफ पैकरों में ढालते हैं मगर यह कि आज तक ऐटमी ज़र्रों ही को ज़ाहिरी हवास से महसूस किया जा सका है न फितरत ही को 'देखा' जा सकता है। फितरत एक तजरीदी (Abstract) चीज़ है जो ज़ाहिरी हवास से महसूस किये जाने से तअल्लुक़ ही नहीं रखती। सिर्फ उसके असरात, उसके मज़ाहिर को देखकर उसका पता चलाया जा सकता है। अब यह दूसरी बात है कि फितरत के मज़ाहिर अगर फितरत के वजूद पर दलील हैं, फितरत के असरात अगर फितरत के क़ानून वजूद को बताते हैं तो ख़ुद क़वानीने फितरत एक ''क़वानीन साज़'' (क़ानून बनाने वाले) अलीम व क़दीर के वजूद पर किस Logic के एतेबार से दलील नहीं बन सकते?

आज की दुनिया जिस टकराव का शिकार है वह यह है कि एक तरफ सिर्फ दिखाई न दे सकने के जुर्म में दुनिया की सबसे बड़ी हक़ीक़त यानी ख़ालिक़ के वजूद का इन्कार कर दिया जाता है, मगर दूसरी तरफ रेडियाई लहरों, कशिशे सक़्ल की लहरों, ब्लैक होल्ज़ (Black Holes) कभी न दिखाई दे सकने वाले सूरज से लाखों गुना बड़े सितारों, मा वरा बनफ़्शी शुआओं और ऐसी–ऐसी काएनात की बहुत सी हक़ीक़तों की खोज और उन पर ईमान साइंस की दुनिया का सरमाया–ए–इफ़्तेख़ार क़रार दिया जाता है क्या अजीब फ़िक्री टकराव है आज की दुनिया जिसका शिकार है।

बहरहाल ऐसे लोगों से ग़ायब इमाम के वजूद को मानने का मुतालबा ख़ुद अपनी ही अक़्ल के ग़ायब होने का पता देगा। मगर हैरत उन मुसलमानों पर है जो 'युअ्मिनून बिल–ग़ैब''

के ज़ेल में ग़ायब ख़ुदा को मानते हैं, जिन्नातों को तस्लीम करते हैं, फ़रिश्तों पर ईमान रखते हैं, शैतान को तस्लीम करते हैं, नबियों और ग़ैर नबियों, ग़ायब इन्सानों को मानते हैं, ग़ायब जानवरों पर ईमान रखते हैं, मगर जब ग़ायब इमाम को मानने के लिए कहा जाता है तो क़हक़हे लगाते हैं, हंसते हैं, मज़ाक़ उड़ाते हैं...............यह हंसने की नहीं बल्कि रोने की जगह है।

कुरआने करीम

इमाम की ग़ैबत के बारे में हमारे अक़ीदे का मज़ाक़ उड़ाने वाले हमारे वह भाई जो ख़ुदा की किताब को उम्मत की हिदायत के लिए काफ़ी समझते हैं काश किताबे ख़ुदा ही में ग़ौर कर लेते। पहले ही पारे में इरशाद होता हैः– ''क़ुर्आन हिदायत है मगर उन ख़ुदा से डरने वालों के लिए जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं और हमारी दी हुई नेमतों में दूसरों को भी शरीक बनाते हैं।'' (बक़रः–2) अरबी ग्रामर के लिहाज़ से मुज़ारेअ् में मानों में इस्तेमरार पाया जाता है यह Continues Tence है। मुज़ारेअ् किसी काम के 'होने' या 'होते रहने' को बताता है। मज़कूरा आयत में 'युअ्मिनूना', 'युक़ीमूना' और 'युनफ़िक़ूना' तीनों सीग़े मुज़ारेअ् के आए हैं। पहले, आख़िरी दो सीग़ों 'युक़ीमूना' और 'युनफ़िक़ूना' को समझ लीजिये तो पहला सेग़ा 'युअ्मिनूना' ख़ुद ही समझ में आ जाएगा। 'युक़ीमुनस्सलाता' यानी एक बार नमाज़ नहीं पढ़ लेते बल्कि जब नमाज़ का वक़्त आता है नमाज़ क़ायम करने के लिए तैयार हो जाते हैं। 'युनफ़िक़ूना' यानी यह नहीं कि एक दो बार ख़र्च कर दिया, एक दो बार ख़ैरात कर दी और बस! नहीं जब भी कुछ मिला उसमें दूसरों को भी शरीक कर लिया। दूसरे लफ़्ज़ों में उन्होंने नमाज़ क़ायम करना और ख़ुदा की रहा में ख़ैरात करना अपना उसूल बना लिया है। जब वक़्त आया नमाज़ के लिये खड़े हो गये, जब कुछ मिला दूसरों को उसमें शरीक कर लिया। इन तमाम बातों के ज़रिये 'युअ्मिनूना बिलग़ैब'' को समझने की कोशिश करें यानी सिर्फ कुछ ग़ैबी हक़ीक़तों पर ईमान ले आना काफी न होगा बल्कि ग़ैबत पर ईमान लाना ज़िन्दगी का उसूल बनाना होगा। ग़ैब पर ईमान लाने की आदत डालनी होगी। यह अन्दाज़ बता रहा है नबूव्वत ख़त्म हो गई मगर ग़ैबत अभी बन्द नहीं की गई है। ईमान बिलग़ैब का तअल्लुक़ सिर्फ़ इन्हीं चीज़ों से नहीं है जिनका तअल्लुक़ गुज़रे से हो, मुस्तक़बिल में भी कुछ हक़ीक़तें ऐसी आने वाली हैं जिन पर ग़ैबत के पर्दे डाल दिये जाएंगे और ''युअ्मिनूना बिलग़ैब'' उसी वक़्त मुकम्मल होगा जब उस ग़ैबत को भी बेचूँ चरा तस्लीम कर लिया जाए।

इमामे ज़माना की ग़ैबत का मज़ाक़ उड़ाने वाले शायद इस हक़ीक़त से बेख़बर हैं कि जानशीने नबी से पहले ख़ुद नबी को कई बार ग़ैबत के पर्दों में छुपाया गया था। शबे हिजरत का वाक़ेअः तो सब ही के सामने है कि हुज़ूर मुश्रिकीन की भीड़ के दरमियान से गुज़रते चले गये और यह मुश्रिकीन ऐसे अन्धे बना दिये गये कि उन्हें ख़बर ही न हुई। आप जब इन मुश्रिकीन के दरमियान से गुज़र रहे थे तो सूरए यासीन की इस आयत तिलावत फ़रमा रहे थेः ''हमने उनके सामने भी दीवार बना दी, उनके पीछे भी दीवार बना दी, इस तरह उनको ढांक दिया कि उनकी आँखें तो हैं मगर देख नहीं सकते।'' पन्द्रहवीं सदी हिजरी के तक़रीबात मनाने वाले मुसलमान क्या हिजरत को याद रखेंगे और ग़ैबत को भूल जाएंगे।

आप[स०] की इस ग़ैबत का हाल तो हर उस शख़्स को मालूम है जिसे तारीख़े इस्लाम के

बारे में ज़रा सी भी मालूमात है मगर ऑहज़रत[स0] के लिए इससे पहले, बेसत के बिल्कुल शुरुआती दौर में भी ग़ैबत हो चुकी थी जिसकी थोड़ी सी वज़ाहत यह हैः

अबुलहब पैग़म्बर[स0] का चचा था मगर उसकी शादी क़बील–ए–बनुउमैय्या के सरदार हर्ब की बेटी उम्मे जमील से हुई थी। उम्मे जमील, अबुसुफ़ियान की बहन, मुआविया की फूफी और यज़ीद की दादी थी। उम्मे जमील ने ऑहज़रत की दुश्मनी विरासत में पाई थी। अबुलहब की इसके साथ शादी हुई तो अबुलहब भी आप[स0] का दुश्मन हो गया। इन दोनों ने मिलकर जितना ऑहज़रत[स0] को सताया, शायद किसी ने भी न सताया। अबुलहब और उसकी बीवी उम्मे जमील की मज़म्मत में ''सूरए लहब'' (इसका एक नाम सूरए मसद भी है) नाज़िल हुआ तो उम्मे जमील गुस्से में आकर रसूल[स0] की तौहीन करने के लिए आप[स0] को तलाश करने लगी।

ऑहज़रत[स0] मस्जिदुल हराम में हज़रत अबूबक्र के साथ बैठे थे। जनाबे अबूबक्र ऑहज़रत से फरमा रहे थे कि ''सरकार! जब से सूरा उतरा है उम्मे जमील का पारा चढ़ा हुआ है। वह मक्का की गली कूचों में आप[स0] को ढूँढती फिर रही है। मुझे बड़ा अन्देशा है कि हुज़ूर के लिए इस बला बे दरमाँ की तरफ से''

अभी यह बातचीत चल रही थी कि उम्मे जमील बिजली की तरह कौन्दती और नागिन की तरह फन्कारती, मस्जिदुल हराम में दाख़िल होते दिखाई दी। हज़रत अबूबक्र ने फ़रमाया कि ''बड़ा ग़ज़ब हो गया, वह आ गई, मुझे बड़ा अन्देशा है, पता नहीं यह बदज़बान हुज़ूर के साथ क्या सुलूक करे।'' हुज़ूर ने मुकम्मल इत्मिनान के साथ जवाब दियाः ''तुम घबराओ नहीं। इसे यहाँ आने दो जब वह यहाँ आएगी तो उसे तुम दिखाई दोगे मैं दिखाई न दूँगा।'' उन्होंने तअज्जुब से पूछा कि ''हुज़ूर! यह कैसे होगा?'' हम दोनों तो साथ–साथ बैठे हैं।'' हुज़ूर ने फरमायाः ''वही होगा जो मैं कह रहा हूँ।'' अभी यह गुफ्तगू हो ही रही थी कि वह तीर की तरह सीधी उसी जगह आ गई और हज़रत अबूबक्र की तरफ़ मुतवज्जे होकर चीख़ती चिल्लाती रही कि ''मुहम्मद मिल जाएं तो बताऊँ, मुहम्मद मिल जाएं तो मज़ा चखाऊँ।'' मज़े की बात यह है कि हुज़ूर वहीं बैठे रहे मगर उस बदनसीब को न दिखाई दिये।

अरबी मसादिर (बुनियादी किताबों) के अलावा इस वाक़ेए की तफ़सील मौलाना मौदूदी की ''तफ्हीमुल कुरआन'' में ''सूरए लहब'' की तफ़सीर में देखी जा सकती है।

ग़ैबत के इस मुशाहेदे के बाद किसी बरहक़ हादी के पर्दे–ए–ग़ैबत में छुप जाने का मज़ाक़ उड़ाना ''सिद्दीक़ की पैरवी करने वालों'' को तो ज़ेब नहीं देता। ''युअ्मिनूना बिबअ्ज़िन व यक्फुरूना बिबअ्ज़िन''

साइंस की खोज

दुनिया की हक़ीक़तों का साइंसी दलीलों से पता लगाने वालों ने यह हैरतनाक खोज की है कि दुनिया का सारा सिस्टम कई तरह की लहरों पर क़ायम है। चुनांचे यह हर शै से निकलने वाली उठने वाली लहरें ही हैं जिनके ज़रिये हमें तरह–तरह की आवाज़ें सुनाई देती हैं, तरह–तहर की चीज़ें दिखाई देती हैं और किसी चीज़ की ख़ुशबू या बदबू महसूस होती है।

हर वह चीज़ जो हमें दिखाई दे रही है इसीलिए कि उसमें रौशनी की लहरें उठ रही हैं जो ऑंखों से टकरा कर उस चीज़ को हमें दिखा

रही हैं। आवाज़ें भी असल में एक तरह की लहरें है जो हमारे कानों के पर्दों से टकराकर उन पर्दों में आवाज़ का एहसास पैदा कर रही हैं। ख़ुशबू और बदबू को ख़ास तरह की लहरों ही के ज़रिये कुव्वते शाम्मा (सूँघने की कुव्वत) को अपने वजूद का एहसास दिलाती हैं। मगर यह सारा सिस्टम ''क़द्दरहू तक़दीरा'' के तहत क़ानूनों, उसूलों और पैमानों में जकड़ा हुआ है। कोई आवाज़ हमें उस वक़्त सुनाई देती है जब आवाज़ की लहरें हमारे कान के पर्दे से टकराएं। मगर इन लहरों के पैमाने में हमारे कान के पर्दे आवाज़ की सिर्फ उन्हीं लहरों का एहसास कर सकते हैं जिनकी Frequency एक सेकेण्ड में 40 हज़ार तक हो। एक सकेण्ड में 10 से कम या एक सकेण्ड में 40 हज़ार से ज़्यादा अगर तमव्वुज हो तो इसका एहसास हमारे रुजहान को आवाज़ की सूरत में हो सकेगा।

चमगादड़ एक परिन्दा है जो कुव्वते बसारत (देखने की ताक़त) से बिल्कुल महरूम है उसकी आँख होती ही नहीं। मगर आपने देखा होगा कि यह परिन्दा तेज़ी से इधर से उधर और उधर से इधर उड़ता रहता है। मगर क्या मजाल जो किसी चीज़ से टकरा जाए। रात की तारीकी हो, बारीक से बारीक तार किसी कोठरी में बाँध दें आप उस तार को न देख सकेंगे और टकरा जाएंगे, दूसरे जानवर उसमें उलझ जाएंगे मगर क्या मजाल जो यह अन्धा परिन्दा उससे टकरा जाए और उसमें उलझ जाए।

इल्मे हैवानात (Zology) बताता है कि यह परिन्दा उड़ता है तो अपने मुँह से मुसलसल आवाज़ें निकालता रहता है ये आवाज़ें सामने वाली हर चीज़ से टकरा–टकरा कर वापस होती रहती हैं और इसी वापस आने वाली आवाज़ से उस परिन्दे को हैरतनाक तरीक़े पर रुकावट बनने वाली हर चीज़ का पूरा–पूरा एहसास हो जाता है और यह उससे साफ बच निकलता है। (बज़ाहिर) अन्धे चमगादड़ के बचाव का यही तरीक़ा है जिसकी नक़ल में आज साइंस ने राडार का सिस्टम बनाया किया है जिसकी बदौलत लम्बी दूरियों, समन्दर की तहों और आसमान की बुलन्दियों में नज़रों से दूर चीज़ों का पता चला लिया जाता है। ख़ास बिजली की लहरों को हवा में या समन्दर की तहों की तरफ फेंका जाता है। यह लहरें जब किसी चीज़ से टकराती हैं तो अपने मरकज़ (Centre) की तरफ वापस होती है। और फिर स्क्रीन पर उन लहरों के ज़रिये से वह चीज़ दिखाई देने लगती है जिससे टकराकर यह पलटती हैं।

बहरहाल चमगादड़ आवाज़ें निकालता भी रहता है और उसकी पलटती आवाज़ सुनता भी रहता है। मगर हम को न उसके मुँह से निकलने वाली आवाज़ सुनाई देती है न वह पलटने वाली आवाज़। यह इसलिए कि उसकी आवाज़ से हवा में जो लहरें उठती हैं उनकी Frequency इस दायरे से बाहर है जिनका एहसास हमारे कान के पर्दे कर सकते हैं।

यानी कुदरत ने हमें कुव्वते सामेआ (सुनने की सलाहियत) दी है मगर उस कुव्वत को अधूरा रखा है। हम सिर्फ महदूद आवाज़ों को ही सुन सकते हैं मगर बहरहाल वह क़ादिर व तवाना इस बात पर कुदरत रखता है। जैसा कि आपने इसी परिन्दे की मिसाल में देखा........... कि इससे बेहतर सलाहियत रखने वाले कान पैदा कर दे। इसके लिए यह बिल्कुल मुम्किन है कि वह अपने ख़ास बन्दों को ऐसे काम दे दे जो उन आवाज़ों को भी सुनने पर कुदरत रखते हों जिन्हें आम इन्सान न सुन सकते हों।

हमें फरिश्ते की आवाज़ न सुनाई दी तो हमने वह्यी का इन्कार कर दिया। मगर जो कान एक मामूली परिन्दे की आवाज़ न सुन सकें वह अगर फरिश्ते की आवाज़ न सुने तो हैरत की क्या बात है।

सुनने के तज़किरे के बाद आईये अब बसारत (देखना) को देखें हम किसी चीज़ को रौशनी ही में देख सकते हैं। सूरज की रौशनी तरह–तरह के रंगों की शुआओं से मिलकर बनती है। रंग का फर्क़ मौजों की क़दो क़ामत के फर्क़ से पैदा होता है। रौशनी की लहरों बड़ी से बड़ी लहर 1000000/8 सेन्टीमीटर है यह लाल रंग की दिखाई देती है। छोटी से छोटी लहर 1000000/26 सेन्टीमीटर है। इससे हमें बनफ्शी रंग दिखाई देता है इनसे बड़ी शुआएं भी हैं और छोटी भी मगर हमारी आँखों को महसूस नहीं होतीं। चुनानचे मावरा बनफ्शी शुआएं हैं मगर महसूस नहीं होतीं।

फिर क्या यह अक़्ल के हिसाब से मुम्किन नहीं है कि ख़ालिक़े काएनात अपने कुछ ख़ास बन्दों की नज़रों की सलाहियत में इज़ाफ़ा कर दे और उनकी कुव्वते बसारत (देखने की सलाहियत) इस हद तक बढ़ा दे कि उनमें बसारत इन लहरों को भी महसूस करने लगे आम इन्सान जिनको महसूस करने से आजिज़ हैं।

और अगर यह ऐन मुम्किन है कि ख़ालिक़े काएनात अपने कुछ ख़ास बन्दों की देखने और सुनने की सलाहियतों की हदों को दोनों तरफ ज़रा–ज़रा बढ़ा दे तो फिर उसका कुदरती नतीजा यह होगा कि यह ख़ास बन्दे वह देखेंगे जो हमें दिखाई न देगा और वह सुनेंगे जिसके सुनने से हम आजिज़ होंगे।

फिर अगर उसने एक तरफ फ़रिश्तों के जिस्म से उठने वाली लहरों के क़द ज़रा बदल दिये हों और उनकी आवाज़ों की लहरों के तमव्वुज में ज़रा तब्दीली कर दी हो और दूसरी तरफ इन्हीं तब्दीलियों की मुनासिबत से अपने कुछ ख़ास बन्दों के बसारत व समाअत के सिस्टम में तब्दीली कर दी हो तो उसमें कौन सी चीज़ इल्म व अक़्ल के ख़िलाफ होगी कि वह ख़ास बन्दे उस फ़रिश्ते को देखें मगर हम न देख सकें वह उसकी आवाज़ को सुनें, हम न सुन सकें।

इस उसूल पर उन तमाम चीज़ों का क़यास किया जा सकता है जो ऑहज़रत[स0] और आपके अहलेबैते ताहिरीन[अ0] के लिए शुहूद व हुजूर की मंज़िल में थीं और हमारे लिए मंज़िले ग़ैब में यानी ऐसे मौजूदात का पाया जाना बिल्कुल अक़्ल के क़रीब है जिनको हम अपने ज़ाहिरी हवास से महसूस कर पा रहे हों और ख़ुदा के कुछ ख़ास बन्दे अपने ज़ाहिरी हवास से उन्हें महसूस कर रहे हैं।

और यहीं पर यह भी समझ लीजिये कि ख़ुदा अगर किसी को पर्दा–ए–ग़ैब में छुपाना चाहता है तो उसे मआज़अल्लाह कोई बहुत पापड़ बेलने की ज़रूरत नहीं है। हमारी नज़रों से किसी को छुपा देने के लिए इतना काफी है कि उसके जिस्म से निकलने वाली रौशनी की लहरों के पैमाने ज़रा बदल दिये जाएं। इतनी सी तब्दीली उसे हमारी नज़रों से छुपाने के लिए काफ़ी होगी।

ग़ैबत के इस तरह के नमूने सांइस के मुसल्लमात (मानी कुबूल की हुई बातों में) से हैं। इसलिए किसी ज़ात का पर्दा–ए–ग़ैबत में होना किसी भी सूरत इल्म व साइंस के ख़िलाफ नहीं कहा जा सकता। □□□